Swami Vivekananda Advanced Journal for Research and Studies
Online Copy of Document Available on: www.svajrs.com
ISSN:2584-105X Pg. 144 - 147

राजस्थानीय संस्कृत उपन्यासों में निरूपित भारतीय संस्कृति और नारी

रवि शंकर शर्मा
शोधार्थी [संस्कृत]
मोहनलाल सुखाड़िया विश्वविद्यालय उदयपुर (राज.)
ravidevriya@gmail.com

Accepted: 22/07/2025
Published: 27/07/2025

सारांश

यह शोध-पत्र राजस्थानी संस्कृत उपन्यासों में निरूपित भारतीय संस्कृति और नारी चित्रण पर केंद्रित है। राजस्थान की सांस्कृतिक और साहित्यिक भूमि ने संस्कृत भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन में विशिष्ट योगदान दिया है। शोध में 'शिवराजविजय', 'जीवनस्य पाथेयम्', 'रसकपूरम्', 'मकरंदिका', 'पद्मिनी' आदि उपन्यासों का विश्लेषण करते हुए यह स्पष्ट किया गया है कि इन उपन्यासों में भारतीय संस्कृति के आदर्श मूल्य—त्याग, भक्ति, वीरता, शिक्षा, नारी मर्यादा, एवं पारिवारिक संस्कार, नारी पात्रों के माध्यम से प्रभावी रूप से प्रस्तुत हुए हैं। नारी पात्र जैसे कल्पना, रसकपूर, पद्मिनी आदि नारी सम्मान, शिक्षा, आत्मबल, और सामाजिक उत्तरदायित्व की प्रतिमूर्ति बनकर उभरती हैं। शोध से यह सिद्ध होता है कि संस्कृत उपन्यास न केवल सांस्कृतिक चेतना के संवाहक हैं, बल्कि वे भारतीय समाज में नारी की भूमिका को आदर्श रूप में स्थापित करने का कार्य भी करते हैं। वर्तमान समय में जब नारी के प्रति असमानता और उत्पीड़न की घटनाएँ बढ़ रही हैं, तब इन उपन्यासों में निहित संस्कारपरक दृष्टिकोण आज के समाज को एक नवदिशा दे सकता है।

***मुख्यशब्द**: भारतीय संस्कृति, संस्कृत उपन्यास, राजस्थानी साहित्य, नारी चित्रण, सांस्कृतिक मूल्य.*

राजस्थान की वीरप्रसविनी पुण्यभूमि का चप्पा-चप्पा त्याग, समर्पण, प्रेम, करुणा और वीरता के गौरवगान से गुंजायमान है। रेतीले धोरों की इस धरती का कण-कण जहाँ मीरा की भक्ति, पन्ना के त्याग, प्रताप के देशप्रेम से ओतप्रोत है, वहीं दूसरी ओर ढोला-मरवण के किस्से, विभिन्न त्योहारों आदि की इंद्रधनुषी छटा भी सहृदय-सामाजिकों को आकर्षित करती हुयी परिलक्षित हुई है। संस्कृत के समुन्नयन, संवर्धन तथा इसकी ज्ञान परम्परा के अग्रनयन में वीर-प्रसविनी राजस्थान की भूमि सदैव पोषिका एवं संरक्षिका रही है। संस्कृत साहित्य की विस्तीर्ण परिधि में राजस्थान का साहित्यिक वैभव अनूठा है। विश्व के समस्त साहित्य में संस्कृत भाषा का गद्य-साहित्य सर्वोत्कृष्ट है। गद्य की विभिन्न विधाएँ हैं। यथा- उपन्यास, निबंध, कथा आदि। उपन्यास शब्द 'उप', 'नि' उपसर्गपूर्वक अस् धातु से घञ् प्रत्यय के योग से बना है। 'उप' अर्थात् निकट और 'न्यास' शब्द थाती या धरोहर का बोधक है। उपन्यास आधुनिक युग की एक लोकप्रिय साहित्यिक विधा है जिसके द्वारा मानव सहज रूप से अपने भावों एवं विचारों का सम्प्रेषण कर सकता है। उपन्यास में मानव जीवन के सर्वांगीण रूप को चित्रित करने का प्रयास किया जाता है। उपन्यास शब्द का प्रथम प्रयोग भरतमुनि कृत नाट्यशास्त्र में प्रयुक्त हुआ है-

'उपपत्ति कृतो ह्यर्थ: उपन्यास: प्रसादनम्'।[1] नाट्यशास्त्र भरतमुनि 10.80

"जो गद्यों में सुशोभित हो, उसे गद्य काव्य कहते है। यहाँ श्रव्य-ग्रन्थ रूप गद्यकाव्य का विचार किया जाता है। इसी गद्य काव्य को उपन्यास कहते है– जैसे कादम्बरी अथवा मेरे द्वारा रचित शिवराजविजय इत्यादि"।[2] गद्यकाव्य मीमांसा, पं.अम्बिकादत्त व्यास, पृ. 32-33

आधुनिक युग का सर्वप्रथम उपन्यास पं.अम्बिकादत्त व्यास का 'शिवराजविजय' माना जाता है जिसकी रचना सन् 1890 ई. में हुई। 'शिवराजविजय' संस्कृत वाङ्गमय का प्रथम ऐतिहासिक उपन्यास भी माना जाता है। यह उपन्यास वर्तमान समय में सर्वाधिक लोकप्रिय है। लोक-जीवन के मर्मस्पर्शी चित्रण एवं जीवन मूल्यों के संवाहक संस्कृत उपन्यास हमारे लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

राजस्थान के संस्कृत उपन्यासों में यथा- पं.अम्बिकादत्त व्यास विरचित 'शिवराजविजय', भट्ट मथुरानाथ शास्त्री कृत 'आदर्शरमणी', आचार्य मेधाव्रत कृत 'कुमुदिनीचन्द्र:', वृद्धिचन्द्र शास्त्री कृत 'आदर्शदम्पत्ती', वैद्य शंकरलाल शर्मा विरचित 'शशिप्रभा', श्रीनिवासाचार्य कृत 'सूर्यप्रभा', पं.गणेशराम शर्मा कृत 'जीवितोऽपिप्रेत भोजनम्', पं.नवलकिशोर कांकर कृत 'यात्राविलासम्', भट्ट मथुरानाथ शास्त्री कृत 'भक्तिभावनो भगवान्', पं.उमेशशास्त्री कृत 'बिल्वमंगलम्', पं.मोहनलाल शर्मा कृत 'पद्मिनी', पं.जगदीशचन्द्र प्राणशंकर विरचित 'मकरंदिका', पं.मथुरानाथ शास्त्री कृत 'मोगलसाम्राज्यसूत्रधारो मानसिंह', चन्द्रमहीपति कृत 'तिलस्मी', देवर्षि कलानाथ शास्त्री विरचित 'जीवनस्य पाथेयम्', पं.श्रीराम दवे कृत 'निर्मला' (अनूदित), पं.मोहनलाल शर्मा पाण्डेय कृत 'रसकपूरम्' (अनूदित) इत्यादि महत्त्वपूर्ण है।

देवर्षि कलानाथ शास्त्री विरचित 'जीवनस्य पाथेयम्', उपन्यास आत्मकथात्मक शैली का प्रतिनिधि उपन्यास माना जाता है। यह उपन्यास नायिका प्रधान है। इसकी नायिका कल्पना है, जो अपना जीवन-वृत्त स्मृत्यालोक शैली में लिखती है। नायिका कल्पना स्वभाव से सरल, सुसंस्कृत एवं स्त्रियोचित गुणों से परिपूर्ण आधुनिक परिवेश की नारी है। कल्पना के पिता एम.ए. की परीक्षा के पूर्व ही उसके विवाह का मुहूर्त निर्धारित कर देते है। विवाह की अनिच्छुक होने पर भी पित्राज्ञा का पालन करते हुए विवाह की मौन सम्मीति देना भारतीय संस्कृति में वर्णित आदर्श पुत्री होने का द्योतक है। संस्कृत काव्यों को वह स्वयं के जीवन की सफलता का सूत्र मानती है।

कल्पना अपनी सखी नलिनी से कहती है कि-

अहं स्त्रीणां स्वातन्त्र्यस्य पक्षपातिनी नास्मि किन्तु तदिदं विश्वसिमि यद् दम्पत्यो: शिक्षा, वृत्ति: कर्म च समानमेव भवेद् येन द्वयोरेकतरोऽपि विषयविभेदं नानुभावेत्।[3] जीवनस्य पाथेयम् पृ. 25

इस प्रकार भारतीय संस्कृति के अनुरूप दाम्पत्य जीवन में समानता के विचार कल्पना को आधुनिक आदर्श पत्नी सिद्ध करते है।

शिक्षा के प्रति पहले भी और आज भी , कहीं-कहीं पर तो वर्तमान में भी भारतीय परिवारों में बालक तथा बालिकाओं के साथ समान व्यवहार नहीं होता। महिलाओं की उच्च-शिक्षा का विरोध तो बराबर होता रहा। यह भेद कब तक रहेगा आखिर? अब तो इस भेद को मिटाना चाहिए।

पं.मोहनलाल शर्मा पाण्डेय कृत 'रसकपूरम्' (अनूदित) उपन्यास मूल रूप से आचार्य उमेश शास्त्री कृत है। इसमें नायिका रसकपूर है। इसके जन्म पर माता अत्यधिक प्रसन्न होती है। रसकपूर सत्यं, शिवं, सुन्दरं का समन्वित रूप है। अपने बाल्यकाल के साथी केशव को प्यार एवं बुद्धिवैभव से समझा कर भावावेश में नहीं बहती है। वरन् पिता के दिखाए मार्ग पर चलती है।[4] रसकपूर पृ 31

रसकपूर में प्रणय के प्रति पूर्ण निष्ठा एवं सत्य के साथ समर्पण की भावना विद्यमान है। प्राणेश्वर द्वारा मृत्युदण्ड देने पर भी उसे उनके प्रति कोई शिकायत नहीं है। रसकपूर की सेविका रतना सुन्दर,शिष्ट,एवं संस्कारित नवयुवती है। रतना के हृदय में भी नारी सुलभ स्नेह अंकुरित होता है। जयपुर रियासत के महाराजा जगतसिंह की प्रेयसी रसकपूर नामक वेश्या के जीवन चरित्र पर आधारित प्रस्तुत ऐतिहासिक उपन्यास में तत्कालीन युग की सांस्कृतिक, सामाजिक एवं ऐतिहासिक पृष्ठभूमि का विशेष चित्रण है। रसकपूर एक वारांगना थी जिसने अपने प्रेम को जीवंत रखते हुए समाज के समक्ष त्याग और तपस्या से अनुस्यूत नारी चरित्र को एक आदर्श रूप में प्रस्तुत किया।

पं.जगदीशचन्द्र प्राणशंकर विरचित 'मकरंदिका', में नायक चित्रकेतु तथा नायिका मकरंदिका है। इस उपन्यास में विवाह में भोजन के समय पर मधुर संगीत का चलना, मायावती जैसी वयोवृद्ध नारी का वरयात्रा में जाना आधुनिक संस्कृति का परिचायक है। इसमें भारतीय संस्कृति के मूलाधार आश्रम व्यवस्था के कर्त्तव्यों का सुन्दर चित्रण किया गया है-

"सिद्धार्थस्य राज्याभिषेकं कृत्वा तं राज्यभारे नियोज्य चित्रकेतुर्विगतचिन्तो जात:। शुभे मुहूर्ते राज्यं परिहाय वानप्रस्थाश्रमं प्रविष्टौ मकरन्दिकाचित्रकेतु वने पर्णकुटीनिर्माणमकारयत्।[5] मकरंदिका पृ.81

पं.मोहनलाल शर्मा कृत 'पद्मिनी', उपन्यास की कथावस्तु मध्यकालीन ऐतिहासिक विषयवस्तु पर आधारित होने से पारस्परिक एवं भारतीय संस्कृति पर आधारित आदर्श संबोधनों का प्रयोग किया है। महाराजा रत्नसिंह ने पद्मिनी को प्रिये, प्राणेश्वरि, प्रियतमे, मानिनि, सुन्दरि आदि संबोधनों से सम्बोधित किया है।[6] पद्मिनी पृ. 114

पद्मिनी अपनी नैतिकता, स्वतंत्रता, पातिव्रत्य धर्म एवं यवनराज से सतीत्व की रक्षा हेतु जौहर व्रत धारण कर लेती है। पद्मिनी अपने सम्मान की रक्षा के लिए जौहर कर अग्निसात् होना अधिक श्रेष्ठ समझती है। पद्मिनी के उज्ज्वल एवं पवित्र चरित्र को समाज के समक्ष प्रस्तुत करके नारी गौरव एवं स्वाभिमान की रक्षा का संदेश दिया गया है।

भारतीय संस्कृति संपत्ति के लिए अंधी दौड़ से रोकते हुए कहती है कि मनुष्य को धन से कदापि तृप्त नहीं किया जा सकता है- 'न वित्तेन तर्पणीयो मनुष्य:'।[7] कठोपनिषद् 1.1.27

समस्त भोग्य पदार्थों का त्याग भाव से प्रयोग करना चाहिए-

तेन त्यक्तेन भुंजीथा:।[8] ईशोपनिषद् 1.1

कहा भी गया है "कि भारतस्य प्रतिष्ठे द्वे संस्कृतं संस्कृतिस्तथा"। अर्थात् संस्कृत और संस्कृति दोनों ही भारत की प्रतिष्ठा है।

नीतिशास्त्र में स्त्री रत्न से बढ़कर कोई दूसरा रत्न नहीं है- न स्त्रीरत्नसमं रत्नम्।[9] चाणक्यसूत्र 313

नारी समाज की आधारशिला है। समाज में स्त्री-पुरूष का सम्बन्ध सर्वाधिक व्यापक और स्थायी होता है। माता का स्थान नारियों में सर्वोपरि है। वैदिक काल से नारी समाज में सम्माननीय थी। समाज में नारियों का महत्त्वपूर्ण स्थान था। प्राचीन काल से लेकर आधुनिक काल तक नारी ने विभिन्न स्थितियों में जीवन व्यतीत किया है। उसके प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिस्थितिवश अनेक परिवर्तन आ रहे है। नारी सर्वदा से ही पुरूष की छत्रछाया में अपने गुण-गौरव का प्रसार करती रही है। उसकी रक्षा का दायित्व पुरूष पर ही अवलंबित है। भारतीय नारी हमेशा से समुन्नत गौरव की अधिकारिणी रही है। हमारे धर्मशास्त्रियों ने नारी के संरक्षण का भार शक्ति के प्रतीक पुरूष के ऊपर डाला है। कन्या, पत्नी, माता के रूप में उसकी मर्यादा के संरक्षण का पुनीत कार्य पुरूष के ऊपर ही निर्भर रहता है। त्याग एवं तपस्या भारतीय संस्कृति के दो स्तम्भ है। भारतीय समाज में नारी त्याग और तपस्या की मूर्ति है। हमारी संस्कृति किसी की सम्पति को बलात् छीन कर आत्मसात करने की अनुमति नहीं देती।

ऋग्वेद में नारी केवल घर की सेविका ही नहीं अपितु सम्राज्ञी भी कही गई है-

सम्राज्ञी श्वशुरे भव सम्राज्ञी श्वश्रूवां भव।

ननान्दरि सम्राज्ञी भव सम्राज्ञी अधिदेवृषु।।[10] ऋग्वेद 10.85.46

अर्थात् हे वधू। तू सास, श्वसुर, ननद तथा देवर के मध्य में राजरानी का रूप प्राप्त करें।

अथर्ववेद में-

'माता भूमि: पुत्रोऽहम् पृथिव्या:।।[11] अर्थववेद (92.1.12)

कह कर हम सबको पृथ्वी का पुत्र बताया है; अर्थात् पृथ्वी हमारे लिए माता के समान पूज्य है।

तैत्तिरीयोपनिषद् में कहा गया है कि-

अयज्ञो वा एष याऽपत्नीक:।[12] तै.ब्राह्मण 2.2.2.6

अर्थात् पत्नी के बिना पति धार्मिक कृत्य सम्पादन में पंगु था उसे यज्ञ करने का अधिकार नहीं था।

पुराणों में नारी के सतीत्व को ही सर्वस्व माना है-

पृथिव्यां यानि तीर्थानि सतीपादेषु तान्यपि।[13] ब्रह्मवैवत 83.119

अर्थात् पृथ्वी के विस्तृत भू-भाग पर प्रसरित तीर्थ सती के चरणों में उपलब्ध हो सकते है।

मनुस्मृति में – यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता:।[14] मनुस्मृति 3.55

अर्थात् जहाँ नारियों की पूजा होती है, वहाँ देवता निवास करते है।

वेदव्यास जी ने महाभारत में कन्या को लक्ष्मी का रूप मानते हुए कहा है कि-

नित्यं निवसते लक्ष्मी: कन्यकासु प्रतिष्ठिता।[15] महाभारत 13.11.14

नारी घर की स्वामिनी और गृहिणी होती है। मम्मट के अनुसार वह घर में समय-समय पर उचित परामर्श देती है-

कान्तासम्मितयोपदेशयुजे।[16] काव्यप्रकाश 1.1

किसी भी समाज या राष्ट्र का विकास तभी संभव है जब वहाँ नैतिक गुण सुदृढ़ रूप से प्रतिष्ठित हों। इस सन्दर्भ में नारियों की भूमिका विशिष्ट होती है क्योंकि नारियाँ ही समाज का निर्माण, पालन-पोषण और विकास करती है

तथा नैतिक मूल्यों का संचार करती है। संस्कृति के निर्माण और संवर्धन में नारी का गरिमामय योगदान रहा है। पारिवारिक आदर्शों, सामाजिक जीवन एवं पुरूष की आत्मिक शक्ति को दृढ़ एवं उत्कृष्ट बनाने में नारी ने अपने विविध रूपों में त्याग एवं तपस्या को समय-समय पर प्रस्तुत किया है। इसलिए समाज के सांस्कृतिक विकास का मानदंड नारी की मर्यादा ही है। आधुनिक काल में स्त्री शिक्षा प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। शिक्षित नारियाँ विज्ञान के क्षेत्र में ही नहीं अपितु व्यवसाय, क्रीड़ा, सैनिकसेवा, राजकीय कार्य, प्रशासकीय क्षेत्र में भी उत्कृष्ट कार्य कर रही हैं। देवस्थान कहे जाने वाले भारत-वर्ष में नारी की जो बीभत्स घर्षणा हो रही है, वह सर्वथा चिंतनीय है। वर्तमान युग में देखा जाए तो नारी घर और समाज दोनों जगह हिंसा, उत्पीड़न, शोषण, दमन, तिरस्कार, अपमान का शिकार हो रही है। ऐसी स्थिति में संस्कृत साहित्य में निरूपित भावों यथा- नारी के प्रति सम्मान और सुरक्षा का विचार करके ही आज के समाज को उन्नत दिशा में ले जाया जा सकता है। जब सभी मनुष्य भारतीय संस्कृति को स्वीकार करेंगे और नारियाँ अपने अधिकारों के साथ कर्त्तव्यपालन करेगी तभी वे हमेशा सामाजिक क्षेत्र में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान देने में सफल होगी।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची -

1. नाट्यशास्त्र भरतमुनि 10.80
2. गद्यकाव्य मीमांसा, पं.अम्बिकादत्त व्यास, पृ. 32-33
3. जीवनस्य पाथेयम्, देवर्षि कलानाथ शास्त्री, पृ. 25
4. रसकपूरम् (अनूदित), पं.मोहनलाल शर्मा पाण्डेय पृ. 31
5. मकरंदिका, पं.जगदीशचन्द्र प्राणशंकर, पृ. 81
6. पद्मिनी पृ. 114
7. कठोपनिषद् 1.1.27
8. ईशोपनिषद् 1.1
9. चाणक्यसूत्र 313
10. ऋग्वेद 10.85.46
11. अर्थववेद (92.1.12)
12. तै.ब्राह्मण 2.2.2.6
13. ब्रह्मवैवत 83.119
14. मनुस्मृति 3.55
15. महाभारत 13.11.14
16. काव्यप्रकाश 1.1

Disclaimer/Publisher's Note: The views, findings, conclusions, and opinions expressed in articles published in this journal are exclusively those of the individual author(s) and contributor(s). The publisher and/or editorial team neither endorse nor necessarily share these viewpoints. The publisher and/or editors assume no responsibility or liability for any damage, harm, loss, or injury, whether personal or otherwise, that might occur from the use, interpretation, or reliance upon the information, methods, instructions, or products discussed in the journal's content.

****